आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2026, Issue-136, Vol-03

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication** Published by **Gholap Archana Bapu** & Printed & published at Harshwardhan Publication, At.Post. Limbaganesh Dist,Beed - 431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Harshwardhan Publication
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
vidyavarta@gmail.com vidyawarta@gmail.com
SCAN ME!
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**

Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**

saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**

Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**

115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**

vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**

Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**

B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**

Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**

AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

MISS. VARSHA ANILRAO TIDKE
FULE-AMBEDKAR COLLEGE OF SOCIAL WORK,
HANUMAN NAGAR, REVENUE COLONY, GADCHIROLI
9421857700
varshaatidke21@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**

Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**

Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**

A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
Ph.no: 09811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**

Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**

At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr. Rabindra Kumar Mishra**

Assist. Prof. & Head, Dept. of English.
Sariya College,Suriya,Giridih, Jharkhand. 825320
Mob.7903699095

- **Dr.Varma Anju**

Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr. Sharad Madhukar Kulkarni,**

(Head of the Department of Political Science,
Gangamai Education Trust College of Arts, Comm. and Science, Nagaon, Taluka, Dist. Dhule)

बहुत व्यापक है लोकजीवन के विविध पक्षों को उजागर किया है। हर लोक साहित्य गोद में प्रकृति लेकर बैठा है। गाँव की सीधी सादी जिंदगी की कथा है ये लोकसाहित्य उन तमाम नारी वर्ग की दास्तान है जो स्वंय पीड़ा में रहीं परन्तु अपने परिवार की खुशी के लिए जीवन के जिया करती थी और उन्हें लोक गीतों के माध्यम से वह जीवन के रंगों को जीती थी विभिन्न प्रकार की ऋतुओं को जीती थीं। नारी जीवन की वेदना नाम इन्हीं लोकगीत के माध्यम से आज भी समाज में देखने को मिलती ही।

लोक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के लोकृ दर्शने धातु से धञ् प्रत्यय करने से हुआ है। इस धातु का अर्थ है देखना होता है जिसका लट् लकार में अन्य पुरुष एकवचन का रूप लोकते है। अत: लोक शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला। इस प्रकार समस्त जनसमुदाय जो इस कार्य को करता है लोक कहलायेगा। लोक शब्द अत्यंत प्राचीन इसका सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर मिलता है। ऋग्वेद में लोक के लिए जन शब्द का भी प्रयोग मिलता है। वैदिक ऋषि कहता है कि विश्वामित्र के द्वारा उच्चरित यह ब्रह्म या मंत्र भारत की रक्षा करता है।

य इमे रोदसी उभे अपमिनद्रमतुष्टवं
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रहमेदं भारतं जन[1]

ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध पुरूष सूक्त में लोक शब्द का व्यवहार जीव तथा स्थान दोनों अर्थों में किया गया है।

नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीष्णो द्योरूसमवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिदशरू श्रोत्रात्ताथा लोकां अकल्पयन[2]

उपनिषदों में अनेक स्थानों पर लोक शब्द का व्यवहार मिलता है जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण में यथार्थी कहा गया है कि यह लोक अनेक प्रकार से फैला हुआ है। प्रत्येक वस्तु में यह प्रभूत यह व्याप्त है कौन प्रयत्न करके भी इसे पूरी तरह से जान सकता है।

बहु व्याहितो वा अयं बहुशो लोक:
क एतद् अस्य पुनरीहितो अयात्[3]

महावैयाकरण पाणिनी अपनी अष्टाध्यायी में लोक तथा सर्वलोक शब्द का उल्लेख किया है वररुचि ने अपने श्वार्तिकोंश में भी लोक शब्द का प्रयोग किया है महाभाष्यकार पंतजलि ने लोक में प्रचलित गौरूशब्द के अनेक रूपों का उल्लेख अपने ग्रंथों में किया है। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में इस शब्द का उल्लेख मिलता है। भागवत गीता में श्लोक तथा लोक संग्रह आदि अनेक शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। भगवान श्री कृष्ण ने लोक संग्रह पर बड़ा बल दिया है। वे अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं

कर्मणैव हि संसिध्दमास्थिता जनकादय:
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन् कर्तुमर्हसि[4]

कहने की आवश्यकता नहीं है कि यहां लोक संग्रह का अर्थ साधारण जनता का आचरण व्यवहार तथा आदर्श है।

लोक शब्द की परिभाषाऋ डॉक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि ष्लोक शब्द का अर्थ जन—पद या ग्राम्य नहीं है बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई। वह समूची जनता है जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं। ये लोग नगर में परिष्कृत रुचि सम्पन्न तथा था सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यकता होती है उसको उत्पन्न करते हैं।[5] विश्व भारती (शांति निकेतन) के उड़िया विभाग के भूत पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर कुंज बिहारी दास ने लोक गीतों की परिभाषा बतलाते हुए कहते हैं किष लोक गीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रभावों से बाहर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते हैं।[6]

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार आधुनिक सभ्यता से दूर अपनी सहज और प्राकृतिक अवस्था में

INDEX

01) A STUDY OF FARMER INCOME ENHANCEMENT STRATEGIES
Dr. Amar Asaram Pawar, Jamner Dist. Jalgaon (M.S.) ||10

02) The Significance of Self-employment in India: Trends, Obstacles and remedies
Mrs. Anagha H. Kannav, Dr. Devendra K. Bhawari, Pune ||13

03) Madhav Sadashiv Rao Golwalkar: Cultural Consolidation and Political.....
Ananya Ganguli, Gour Banga, Malda ||19

04) The impact of social media on the studies of students studying in.....
Bhumikumari Kishorbhai Solanki ||22

05) Girish Karnad and His Contribution to Indian English Drama
Manjeet Singh, Sargaon, Distt. Mungeli C.G. ||25

06) Socio-economic status of women in India: A Sociological study
Dr. Maruthi M., Savadadtti Dist: Belagavi ||27

07) A COMPARATIVE ANALYSIS OF CONSUMER ATTITUDE TOWARDS SOCIAL......
Dr. Neetu Singh Rajput, Gwalior (M.P.) ||31

08) The Feministic Perspective in An American Brat by Bapsi Sidhwa
Dr. Nitin Akhuj, Samudrapur Dist. Wardha ||35

09) The Role of Digital Financial Literacy in Strengthening Women's.....
Dr. Pooja Paharia, Pratibha Singh, Jaipur ||41

10) Environmental Ethics and Sustainable Living in Ancient Indian Texts: A.....
Pradip Dutta, Birbhum, West Bengal ||48

11) Impacts of AI on Socio-Political Status Of Women: Challenges......
Priyanka Rathore, Bilaspur ||54

12) Impact of BNP-led Bangladesh on India-Bangladesh relations
Dr. Promila, Dr. Yogendra Singh, Rohtak ||56

13) A STUDY ON AWARENESS LEVEL OF STARTUPS ON STARTUP SCHEMES AND.....
Ms. Rani Dwivedi, Dr. Niraj Kumar Singh, Siddharth Nagar, IND ||63

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

कुछ विद्वानो के नाम उपलब्ध होते हैं।

प्रतापगढ़

प्रतापगड़ राज्य से मिलने वाले अनेक शिलालेख तथा ख्यातों से इस भाग में होने वाले संस्कृत और भाषा के प्रचार का अनुमान लगाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में दो शिलालेख घोटासी गाँव के ११वी शताब्दी के प्रारम्भ के आस–पास के और तीसरा लेख गोतमेश्वर का विक्रम की १६वी शताब्दी का उल्लेखनीय है। बडवे और भाटो की बनायी हुई ख्याते तथा वंशावलियों भी स्थानीय भाषा के विकास पर काफी प्रकाश डालती है। हरिसिंह (१६२८–१६७३) स्वयं विद्वान था और विद्वानो का आदर करता था। उसने स्वयं अपने दरबारी पण्डित जयदेव रचित 'हरिविजय नाटक' पर सुबोधिनी टीका बनायी तथा व्याकरण पर 'हारे सारस्वत' की रचना की थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१ G.N Sharma dh iqLrdsa Social Life in medieval Rajathan½ 1500&1800A-D

२ Dashratha Sharma-Rajasthan Through The Ages vol.1

३वी एस भटनागर की — मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास और संस्कृति पर चुने हुए पेपर्स

४ Krishnalal, Ray dh Education in medieval india

५ सी एन पटवर्द्धन, मध्यकालीन भारत में शिक्षा का इतिहास (१९३९)

६ आधुनिक शोध प्रबंध–shodhganga जैसी वेबसाईट शोध प्रबन्ध– History of Education in The princely state of Jaipur 1818 to1947

७ राजस्थान अध्ययन की पाठ्यपुस्तके– राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड(RBSE)

अभिलेख और प्रशस्तियाँ–

१ रणकपुर प्रशस्ति और कुंभलगढ़ प्रशस्ति–१४६०ई)

२ श्रंगी ऋषि शिलालेख (१४२८ई) गुहिल वंश के शासको

साहित्यक कार्य–

१ आइन–ए–अकबरी — अबुल फजल

२ ख्यात साहित्य– मुहणोत नैणसी की नैणसी री ख्यात

३ राजस्थानी पद्य रचनाएँ — सारंगधर की सारंगधर संहिता और सारंगधर पद्धति

21

अवधी के लोकगीतों में बारहमासा गायन शैली एवं लोकजीवन के रीति रिवाज

डॉ. दीप्ति सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
हिंदू कन्या महाविद्यालय सीतापुर उत्तर प्रदेश

****

मनुष्य और प्रकृति का बहुत अटूट रिश्ता है यही सम्बन्ध हमारे देश की चित्रकला ललित कला मूर्ति कला और संगीत में परिलक्षित है क्योंकि इसका जन्म प्राकृत नैसर्गिक गोद से ही हुआ है। तभी तो हमारे भारत के भविष्यदर्शी ऋषि से मुनियों ने प्रतिदिन होने वाले उषा रूकाल,संध्या काल, रात्रि, प्रकाश और अन्धकार आदि प्राकृतिक उपादानों की शारस्वत लय का गहन अध्ययन किया है। किसी भी राष्ट्र के सांस्कृतिक वैभव का परिचय वहां का लोग साहित्य ही होता है। जिसमें उस राष्ट्र की परंपराएं,संस्कार, जीवनदर्श, उत्सव विषाद जीवन के सुख: दु:ख,नायक नायिकाएं, ऋतु गीत, विवाह गीत, भजन, राजनीतिक, सामाजिक गीत विरह गीत, इत्यादि को वाणी प्रदान की जाती है। प्रत्येक देश में लोक साहित्य की एक सुदीर्घ परंपरा प्राप्त होती है। परन्तु अधिकांशत: देशों का लोक साहित्य एकाध भाषाओं अथवा बोलियों तक सीमित रहता है भारत वर्ष इस मामले में सौभाग्यशाली है क्योंकि इस देश की कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी की परंपरा ने इसे बोलियों और भाषाओं का एक विस्तृत कोश प्रदान किया है। जिसमें लोक साहित्य के अलबेले रंग रूप क्रीडा करते हुए देखे जा सकते हैं। कहना न होगा की अवधी भी इस कोष की अक्षम मंजूषा है। अवधी साहित्य का लोक जीवन

वर्तमान तथाकथित असभ्य एवं असिक्षित जनता को लोक कहते हैं जिसका जीवन दर्शन और रहन सहन प्राचीन परंपराओं विश्वासों तथा आस्थाओं द्वारा परिचालित एवं नियंत्रित होता है।[5]

रीति रिवाज एवं बारहमासा गायन शैली एक ही सिक्के के दो पहलू हैं क्योंकि मनुष्य का जीवन प्राकृत पर निर्भर है और हर महीने के रीति रिवाज त्यौहार मौसम के अनुसार ही बनाये गये हैं। जो इन लोकगीतों के माध्यम से हम अपनी संस्कृति को परंपराओं, कथाओं, कहानियों के द्वारा सदियों से हमारी पीढ़ियाँ गाते आ रही है। मनुष्य अपने जन्म से लेकर मृत्यु को लोक गीतों के द्वारा हमारे सामने व्यक्त करता है वह प्रकृति की आंचल में बैठकर मधुर लय तालों के माध्यम से जीवन के हर रंग को बिखेरता है जो हमें अवधी के लोक गीतों में देखने को फोन प्रचुर मात्रा में मिलता है। जैसे सोहर, चौता, कजरी, ठुमरी, फाग, जातसार रोपनी कटनी विवाह के विभिन्न प्रकार की विधियों में गाए जाने वाले लोक गीत जैसे गारी, परछन, विवाह सम्पन्न होने तक के गीत समस्त गीतों को वह अपने रीति रिवाजों के माध्यम से हमारे सामने व्यक्त करती है। जब एक स्त्री एक वंश को जन्म देती है अर्थात जब वह पुत्र को जन्म देती है। तो उस घर के साथ साथ पूरे वो गाँव में प्रसिद्ध होती है। पुत्र के पैदा होने पर बधाई बजती है। पुत्र की बुआ बड़े उत्साह से बधाई लाती है, उस समय बधाई के गीत गाए जाते हैं।

देखे बृज मा बधाई बाजै
काहे के छुरवा ते ना: छिनायौ, काहे के जल अन्हवाये
सोने के छुरवा ते ना: छिनायौ, जमुना के जल अन्हवाये
केहि के कोखिया मा जलमु लियौ हे, केहिके तुम लालू कहायो
देउकी की कोखिया मा जलमु लियौ है जसुदा के लाल कहायो।[6]

यहाँ तक की बच्चों की खिलौना झुंझुना को लोकजीवन में विशेष महत्व प्रदान किया गया है। यह हमारे लोक जीवन की हर वह छोटी सी छोटी चीज को अपने जीवन में विशेष बनाकर रखती है। एक मधुर गीत का उदाहरण देखिए सोने का झुंझुना बाजना रूपए का झुंझुना बाजना

लाल काहे का तेरा झुंझुना, काहे के कंकड डारे रे
सोने को मेरा झुंझना रे,मोतीचूर के कंकड डारे रे
गढ़ा गढ़वा झुंझुना रे,हाटे धरौ कि बाजार रे
कै लख को मेरा झुंझना रे,कै लख बाबा देय रे
नौ लख को मेरा झुंझना रे,दस लख बाबा देय रे
ज्यों ज्यों झुंझुना बाजन लागे,आजी बलइया लेय रे[7]

यहाँ हमें कहीं कहीं गाँव की सीधी साधी नारियों में नारी अभिमान का गौरव भी प्राप्त होता है तथा नारी सशक्तिकरण के प्रमाण देखने को मिलता है।क्योंकि उसके बिना समाज का एक हिस्सा अधूरा है। रीति रिवाजों की परंपरायें उसके बिना निभायी नहीं जा सकती है। हर बरस पुत्र के लंबी आयु के लिए यही स्त्रियाँ भाद्रपद कृष्ण पक्ष में षष्ठी तिथि को ललही छठ या हल छठ करती हैं यह छठ बिना हल के उत्पन्न किए हुए अनाजों का व्रत है। अवधी के लोक गीतों का रंग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हुए लोग गाते हैं और अपने सुख और दुख को इन्हीं गीतों के माध्यम से व्यक्त करते सिर्फ स्त्रियां ही नहीं पुरुष वर्ग भी गीत को गाते हुए अपना कार्य करते हैं खेतों में काम करते हुए हल को कांधे पे रख कर खेत में ले जाते हुए कटाई, रोपाई, के कार्य करते हुए विभिन्न प्रकार की ऋतुओं के फसलों को लगाते हुए लोक गीतों को गाते हुए अपने जीवन का आनंद उठाते यूं कहें कि ये लोक गीत जीवन के अहम् हिस्से हैं। विभिन्न प्रकार की आधुनिकता से दूर वह पीढ़ियों जो घरों में कार्य करते हुए भी इन गीतों को गाती थीं जैसे जातसार, देवी के गीत, पचरा चौता,। विवाह संस्कार जीवन विभिन्न संस्कारों में से एक है। विवाह संस्कार के विभिन्न रीतियाँ होती हैं जिसको निभाते समय विभिन्न प्रकार की लोक गीतों को गाया जाता है। ये लोग के सिर्फ लोकगीत नहीं हैं अपितु ये जीवन के संघर्ष की कहानी भी है। एक पिता अपनी पुत्री के

27) भारत के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में जलवायु एवं ऊर्जा.....
प्रो. कैलाश मुजाल्दा, कायथा, जिला उज्जैन (म.प्र.) ||133

28) लोक परंपराओं से सामाजिक परिवर्तन तक—राजस्थान के समाज की संरचना......
ओमप्रकाश, फालना, जिला —पाली, राजस्थान ||136

29) उत्तर प्रदेश के जनजातियों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन : एक विश्लेषण
डॉ. धनंजय शर्मा, दल्लावाला—खानपुर, हरिद्वार, (उत्तराखण्ड) ||139

30) भारतीय तत्त्वज्ञान आणि समकालीन नैतिक आव्हाने
प्रा. सतीश रामकिशन सोनकांबळे, जळकोट जि. लातूर ||145

31) जळगाव जिल्ह्यातील केळी उत्पादनाचा स्थानिक अर्थव्यवस्थेवर होणारा परिणाम
प्रा. सुशिल भाऊराव लोंढे, जळगाव ||149

32) मुस्लीम सत्यशोधक चळवळीतील हमीद दलवाई यांचे कार्य
मंगेश पंढरीनाथ जोर्वेकर, डॉ. विजयकुमार खंदारे, तळेगाव दाभाडे, जि. पुणे ||154

33) आत्मनिर्भर भारत, उत्पादनक्षमता आणि रुपयाची भविष्यातील ताकद....
देवानंद गजानन जंजाळ, पातूर ||158

34) कृत्रिम बुध्दिमत्तेच्या युगात ग्रंथालयांचे बदलते स्वरूप आणि महत्व
डॉ. निर्मला गोविंदराव बोराडे, कृष्णा विनोद राठोड, सोयगाव ||164

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

होली खेले रघुवीरा

कवन हाथे कंनक पिचकारी कवन हाथे अबीरा

कितना कठिन रहा होगा वह जीवन जिसमें कोई सुविधा नहीं ऐसी स्थिति में किसी इतिहासकार के लिए कोई विकल्प बहुत सीमित हो जाते हैं तब क्षेत्र के लोक गीत उसे एक गहरी आश्वस्ति प्रदान करते हैं, अलग—अलग तेवर और कलेवर वाले ये गीत अपने भीतर कई युगों के यथार्थ को अपने मिथ के सुर ताल को बचाए हुए है हम आज अपनी संस्कृति से बहुत दूर चले गए हैं। यह लोकगीत हमारे जीवन के सुख दुरूख, आपत्ति विपत्ति, उजड़ने बसने,की कहानी सिर्फ इन्हीं लोकगीतों के माध्यम से समझा जा सकता है वह हमारी ही पीढियाँ थी जो इन लोकगीत को गाती थी। ऋतुओं में अपने जीवन के रीति रिवाज को जीती थीं। आज इन लोक गीतों को संरक्षित करने की आवश्यकता है वरना हम अपने वास्तविक से कोसो दूर होते चले जायेगे।

सन्दर्भ सूची—

१— लोक साहित्य की भूमिका— डॉ. कृष्णादेव उपाध्याय लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद २११००१ प्रथम संस्करण २०१९ पृष्ठ संख्या—९

२— वही

३— वही

४— लोक साहित्य की भूमिका— डॉ. कृष्णादेव उपाध्याय लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद २११००१ प्रथम संस्करण २०१९ पृष्ठ संख्या १०

५— लोक साहित्य की भूमिका— डॉ. कृष्णादेव उपाध्याय लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद २११००१ प्रथम संस्करण २०१९ पृष्ठ संख्या ११

६— वही

७— लोक साहित्य की भूमिका— डॉ. कृष्णादेव उपाध्याय लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद २११००१ प्रथम संस्करण २०१९ पृष्ठ संख्या २२

८— अवधी लोक साहित्य कला एवं संस्कृति— प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल वाणी प्रकाशन २१—ए दयानन्द रोड दरियागंज नई दिल्ली—११०००२ प्रथम संस्करण २०२० पृष्ठ संख्या १४०

९—वही

१०—अवधी लोक साहित्य कला एवं संस्कृति— प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल वाणी प्रकाशन २१—ए दयानन्द रोड दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ प्रथम संस्करण २०२० पृष्ठ संख्या ३६

११—वही

❑❑❑

लिए कितनी कठिनाई से वर से को ढूंढता है उसका भी चित्रण हमें इन्हें लोक गीतों के माध्यम से पता चलता है। हर समाज में विभिन्न प्रकार के जातियों का निवास होता है। और अपने जीवनयापन के लिए वह अपने वर्ग के अनुसार कार्य करते है चमरउआ चमरगीत यह गीत चमारों की जाति के लोग अपने वैवाहिक अवसर यहाँ अन्य अवसरों पर गाते एवं दुल्लीनाच करते हैं। मुख्य भूमिका करने वाला सुआंगी (स्वांगी —स्वांग करने वाला) होता है। जो की दुल्लीनाच करता है। वह बन ठन कर आता है और स्त्री पात्र(जो कि दुल्ली नाच के साथ काम करती है) को विलंब से आने के लिए कोड़ा लगाते हैं इसमें शीशे की लंबी लंबी बोतलों में मिट्टी का तेल से भिगोया अथवा किसी बाँस के डंडे से मिट्टी के तेल से भिगोया हुआ कपड़ा लपेट कर मसाल बनाया जाता है जोकि प्रकाश और नृत्य की अदायगी दोनों दृष्टि से उपयोगी होता है। दुल्ली नाच का एक गाना जो शारदा प्रसाद चमार का जो बहुत प्रसिद्ध है।

कंवने रंगे मुंगवा कंवन रंग मोतिया कंवन रंग ननदी तोर बिरना

काले रंग मुंगवा पियर रंग मोतिया संवर रंग भउजी मोर बिरना

फुटि गइल मुंगवा चिटिकि गइले मोतिया रिसाइ गइले ननदी तोर बिरना

बिनि लेबइ मुंगवा बहोरि लेबइ मोतिया मनाइ लेबइ भउजी अपन बिरना[10]

उस स्त्री की विरह वेदना तो देखिए जिसका पति परदेस को चला गया रोजी—रोटी कमाने के लिए और पीछे छोड़ गया अपनी ब्याहता पत्नी इन्हीं गीतों के माध्यम से वह कहती हैं।

चंपई में नउदस फूल चमेली एकइ कली
गोरिया कइ सगरी रैन गरदकड एकइ घरी
अम्मा कइ पकरे डारि अकेले गोरी केवरे खरी
चले जा मुरखू अनारी हमइ तोहइ कारे परी
गोरे वारे बलम परदेसा निकला गइ हमहि कछु कहि न गए
हथवा में दइ गए पाँच रुपइया दिलासा दइ कइ गए
छतियन बजड़े किवाड़ जजिरिया दइ कइ गए [11]

यह गीत बहुत मार्मिक एवं प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। हमारे एक भी रीति रिवाज एवं त्योहार नहीं जो। विभिन्न ऋतुओं पर आधारित न हों क्योंकि इसके बिना मनुष्य अपनी जीवन की कल्पना नहीं कर सकता है। कितनी ही पीढियाँ गुजर गई इन रीति रिवाजों को निभाते एवं लोकगीतों को गाते हुए कितना साधारण था वह जीवन जिसमें कोई आधुनिकता का प्रवाह नहीं था हम सभी अपनी प्रकृति की गोद में बैठकर जीवन के आनंद को जीते थे। वे स्त्रियां जो लोक गीतों को गाकर संपूर्ण जीवन व्यतीत कर देती थी वह सास की दुत्कार ननद के ताने पति से प्रेम और अपमान संयोग और वियोग इन्हीं लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त करती थी। जीवन पर्त पति और पुत्र की मंगलकामना करते हुए विभिन्न प्रकार के व्रत को करती थी । अब आधुनिक पीढ़ी इन लोक गीतों को अपनी संस्कृति को बेकार समझती है पर उनको क्या पता कि वो हमारी मां बहनें ही हैं जो इन लोक संस्कृति को जीवंत करके रखी हैं। यह लोक गीत हमारी पीढ़ियों की धरोहर हैं जो विलुप्त हो रही थी क्योंकि आधुनिक पीढ़ी इसको अपनाने में शर्म महसूस करती है। वह भारतीय संस्कृति को छोड़कर पश्चिमी संस्कृति के अनुकरण में लगी है आज हम कहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग बहुत है क्योंकि हम अपनी प्रकृति के पास रहना छोड़ दिये हैं अब ना कोई प्रभाती गाता ना ही कोई जातसार गाता है ना कोई अब बारहमासा को गाता क्योंकि अब ऋतुओं के अनुसार कोई रीति रिवाज नहीं मनाता है अब न तो फाग के महीने में कोई फगुआ गाता है बसन्त ऋतु से फाल्गुन महीने तक गाते थे लोक गीत जिसका सुन्दर उदाहरण अवधी लोक गायिका मालिनी अवस्थी जी ने अपने शब्दों में गाया ।

होली खेले रघुवीरा अवध में

13:41 m 60%
26/36
Import(36)

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) Determinants of Tourist Choices for a Destination: A Case Study of Chopta......
Rohit Sharma, Mansi Nath, Dehradun, Uttarakhand ||68

15) Yoga: A Passage to Spirituality – Integrative Perspectives from Ancient....
Dr. Seema Nigam, Kanpur ||76

16) Awareness and Utilization of Electronic Resources by Library Users
Dr. Shabeena Shaikh Shakeel ||83

17) Wounded words: the poetics of illness and the Architectures of Care in .....
Sharmistha saha, Alipurduar west bengal ||85

18) Healthcare Quality and Safety
Sneha ||90

19) Live-in Relationships and Legal Recognition in India
SRISMRITI REKHA DUTTA, Punjab, Sirhind ||94

20) मध्य युगीन राजस्थान मे शिक्षा
विक्रम कुमार वर्मा, सैंथल (दौसा) ||102

21) अवधी के लोकगीतो मे बारहमासा गायन शैली एवं लोकजीवन के रीति रिवाज
डॉ. दीप्ति सिंह, सीतापुर उत्तर प्रदेश ||107

22) डिजिटल युग में हिंदी साहित्य का बदलता लोक–बोध
डॉ. अम्बा शुक्ला, नगरी, धमतरी (छ.ग.) ||112

23) माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षा एवं बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत.....
डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, सूर्य नारायण गुप्ता ||118

24) तिरिछ कहानी की समकालीन प्रासंगिकता : एक अध्ययन
कुमारी हिमांशु, डॉ. हंसराज चौहान, हौद, सीकर ||121

25) मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी का समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. विजय कलमधार, छिंदवाड़ा ||124

26) इक्कीसवीं सदी के यात्रा साहित्य मे पर्यावरण बोध और जिम्मेदार पर्यटन....
मंजु जाट, सीकर ||129

Select

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

INDEX

01) A STUDY OF FARMER INCOME ENHANCEMENT STRATEGIES
Dr. Amar Asaram Pawar, Jamner Dist. Jalgaon (M.S.) ||10

02) The Significance of Self-employment in India: Trends, Obstacles and remedies
Mrs. Anagha H. Kannav, Dr. Devendra K. Bhawari, Pune ||13

03) Madhav Sadashiv Rao Golwalkar: Cultural Consolidation and Political.....
Ananya Ganguli, Gour Banga, Malda ||19

04) The impact of social media on the studies of students studying in.....
Bhumikumari Kishorbhai Solanki ||22

05) Girish Karnad and His Contribution to Indian English Drama
Manjeet Singh, Sargaon, Distt. Mungeli C.G. ||25

06) Socio-economic status of women in India: A Sociological study
Dr. Maruthi M., Savadadtti Dist: Belagavi ||27

07) A COMPARATIVE ANALYSIS OF CONSUMER ATTITUDE TOWARDS SOCIAL......
Dr. Neetu Singh Rajput, Gwalior (M.P.) ||31

08) The Feministic Perspective in An American Brat by Bapsi Sidhwa
Dr. Nitin Akhuj, Samudrapur Dist. Wardha ||35

09) The Role of Digital Financial Literacy in Strengthening Women's.....
Dr. Pooja Paharia, Pratibha Singh, Jaipur ||41

10) Environmental Ethics and Sustainable Living in Ancient Indian Texts: A.....
Pradip Dutta, Birbhum, West Bengal ||48

11) Impacts of AI on Socio-Political Status Of Women: Challenges......
Priyanka Rathore, Bilaspur ||54

12) Impact of BNP-led Bangladesh on India-Bangladesh relations
Dr. Promila, Dr. Yogendra Singh, Rohtak ||56

13) A STUDY ON AWARENESS LEVEL OF STARTUPS ON STARTUP SCHEMES AND.....
Ms. Rani Dwivedi, Dr. Niraj Kumar Singh, Siddharth Nagar, IND ||63

27) भारत के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में जलवायु एवं ऊर्जा.....
प्रो. कैलाश मुजाल्दा, कायथा, जिला उज्जैन (म.प्र.) ||133

28) लोक परंपराओं से सामाजिक परिवर्तन तक–राजस्थान के समाज की संरचना......
ओमप्रकाश, फालना, जिला –पाली, राजस्थान ||136

29) उत्तर प्रदेश के जनजातियों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन : एक विश्लेषण
डॉ. धनंजय शर्मा, दल्लावाला–खानपुर, हरिद्वार, (उत्तराखण्ड) ||139

30) भारतीय तत्त्वज्ञान आणि समकालीन नैतिक आव्हाने
प्रा. सतीश रामकिशन सोनकांबळे, जळकोट जि. लातूर ||145

31) जळगाव जिल्ह्यातील केळी उत्पादनाचा स्थानिक अर्थव्यवस्थेवर होणारा परिणाम
प्रा. सुशिल भाऊराव लोंढे, जळगाव ||149

32) मुस्लीम सत्यशोधक चळवळीतील हमीद दलवाई यांचे कार्य
मंगेश पंढरीनाथ जोर्वेकर, डॉ. विजयकुमार खंदारे, तळेगाव दाभाडे, जि. पुणे ||154

33) आत्मनिर्भर भारत, उत्पादनक्षमता आणि रुपयाची भविष्यातील ताकद....
देवानंद गजानन जंजाळ, पातूर ||158

34) कृत्रिम बुध्दिमत्तेच्या युगात ग्रंथालयांचे बदलते स्वरूप आणि महत्व
डॉ. निर्मला गोविंदराव बोराडे, कृष्णा विनोद राठोड, सोयगाव ||164

www.vidyawarta.com/03 _ http://www.printingarea.blogspot.com

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) Determinants of Tourist Choices for a Destination: A Case Study of Chopta......
Rohit Sharma, Mansi Nath, Dehradun, Uttarakhand ||68

15) Yoga: A Passage to Spirituality – Integrative Perspectives from Ancient....
Dr. Seema Nigam, Kanpur ||76

16) Awareness and Utilization of Electronic Resources by Library Users
Dr. Shabeena Shaikh Shakeel ||83

17) Wounded words: the poetics of illness and the Architectures of Care in .....
Sharmistha saha, Alipurduar west bengal ||85

18) Healthcare Quality and Safety
Sneha ||90

19) Live-in Relationships and Legal Recognition in India
SRISMRITI REKHA DUTTA, Punjab, Sirhind ||94

20) मध्य युगीन राजस्थान में शिक्षा
विक्रम कुमार वर्मा, सैंथल (दौसा) ||102

21) अवधी के लोकगीतों में बारहमासा गायन शैली एवं लोकजीवन के रीति रिवाज
डॉ. दीप्ति सिंह, सीतापुर उत्तर प्रदेश ||107

22) डिजिटल युग में हिंदी साहित्य का बदलता लोक–बोध
डॉ. अम्बा शुक्ला, नगरी, धमतरी (छ.ग.) ||112

23) माध्यमिक स्तर पर सह–शिक्षा एवं बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत.....
डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, सूर्य नारायण गुप्ता ||118

24) तिरिछ कहानी की समकालीन प्रासंगिकता : एक अध्ययन
कुमारी हिमांशु, डॉ. हंसराज चौहान, हॉंद, सीकर ||121

25) मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी का समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. विजय कलमधार, छिंदवाडा ||124

26) इक्कीसवीं सदी के यात्रा साहित्य में पर्यावरण बोध और जिम्मेदार पर्यटन....
मंजु जाट, सीकर ||129